महिला शिक्षा और आर्थिक विकास: एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

सरिता आर्या, फैकल्टी ऑफ बी.एड., ओम बायो साइंस एण्ड फार्मा कॉलेज, ग्राम - पंचायनपुर, पो.ऑ. - दौलतपुर, रूड़की, जनपद - हरिद्वार

सारांश

महिला शिक्षा किसी भी समाज के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास का एक महत्वपूर्ण आधार है। शिक्षा महिलाओं को न केवल ज्ञान एवं कौशल प्रदान करती है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर, जागरूक एवं सशक्त बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य महिला शिक्षा और आर्थिक विकास के बीच संबंधों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन करना है। भारतीय समाज में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति, सामाजिक असमानता, लैंगिक भेदभाव, आर्थिक निर्भरता तथा रोजगार के अवसरों जैसी समस्याएँ उनके विकास को प्रभावित करती हैं। शिक्षा के माध्यम से महिलाएँ रोजगार, स्वरोजगार एवं उद्यमिता के क्षेत्र में अपनी भागीदारी बढ़ा सकती हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। इसके अतिरिक्त, महिला शिक्षा परिवार के जीवन स्तर, स्वास्थ्य, बच्चों की शिक्षा, सामाजिक जागरूकता तथा निर्णय लेने की क्षमता को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से महिला शिक्षा सामाजिक परिवर्तन, लैंगिक समानता एवं सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने का एक प्रभावी माध्यम है। यह अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि किसी भी राष्ट्र का समग्र एवं सतत आर्थिक विकास महिलाओं की शैक्षिक भागीदारी और आर्थिक सशक्तिकरण के बिना संभव नहीं है। अतः महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करना सामाजिक प्रगति और आर्थिक विकास दोनों के लिए आवश्यक है।

मुख्य शब्द: महिला शिक्षा, आर्थिक विकास, महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता, सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक न्याय, आर्थिक आत्मनिर्भरता, रोजगार, सामाजिक विकास एवं सतत विकास।